

## वैश्विक क्षय रोग रपिर्ट 2024

### प्रलिस के लयि:

क्षय रोग (TB), WHO की वैश्विक क्षय रोग रपिर्ट 2024, सतत वकिस लक्ष्य (SDG), वन वरलड टीबी समटि (2023), नक्षय पोषण योजना

### मेन्स के लयि:

क्षय रोग उनमूलन के लयि भारत की प्रतबिद्धता और पहल, क्षय रोग उनमूलन के लयि भवषिय की रणनीतयिँ, राष्ट्रीय क्षय रोग उनमूलन कार्यक्रम, भारत और वशिव में क्षय रोग की वर्तमान स्थति।

स्रोत: पी.आई.बी

### चर्चा में कयों?

वशिव स्वास्थय संगठन की वैश्विक क्षय रोग रपिर्ट 2024 के अनुसार, भारत ने वर्ष 2015 से 2023 तक क्षय रोग (TB) के मामलों में उल्लेखनीय 17.7% की गरिवट आई है।

- यह गरिवट वैश्विक औसत 8.3% से अधिक है, जो राष्ट्रीय क्षय रोग उनमूलन कार्यक्रम (NTEP) के तहत वर्ष 2025 तक तपेदकि को समाप्त करने की भारत की अटूट प्रतबिद्धता को रेखांकति करती है।

### वैश्विक क्षय रोग रपिर्ट 2024 के प्रमुख नषिकर्ष क्या हैं?

- वैश्विक तपेदकि घटना रुझान:** वर्ष 2023 में 8.2 मिलियन नए क्षय रोग के मामले दर्ज कयि गए, जो वर्ष 2022 में 7.5 मिलियन से अधिक है, जो वर्ष 1995 के बाद से WHO द्वारा दर्ज कयिा गया उच्चतम आँकड़ा है।
  - अनुमान है कविर्ष 2023 में क्षय रोग से 1.25 मिलियन मृत्यु दर्ज की गई थी, जो वर्ष 2022 में 1.32 मिलियन से थोड़ी कम थी।
- क्षय रोग मामलों की जनसांख्यिकी:** 30 नमिन और मध्यम आय वाले देशों (LMIC) में वैश्विक क्षय रोग का 87% हसिसा है।
  - अकेले पाँच देश भारत (26%), इंडोनेशयिा (10%), चीन (6.8%), फलीपींस (6.8%) और पाकसिस्तान (6.3%) वैश्विक क्षय रोग बोझ का 56% योगदान देते हैं।
  - क्षय रोग के 55% मामले पुरुषों में, 33% महिलाओं में और 12% बच्चों तथा युवा कशिरों में पाए गए।
- क्षय रोग उनमूलन रणनीतल लक्ष्य (वर्ष 2015 के बाद):** वशिव स्वास्थय संगठन की क्षय रोग उनमूलन रणनीतल के तहत देशों को वर्ष 2025 तक क्षय रोग से होने वाली मृत्यु दर में 75% और घटना दर में 50% की कमी लानी होगी।
  - हालाँकि, वशिव स्वास्थय संगठन की वैश्विक क्षय रोग रपिर्ट 2024 और इंडयिा क्षय रोग रपिर्ट 2024 से संकेत मलतिा है कि भारत द्वारा इन लक्ष्यों को हासलि करना या वर्ष 2025 तक क्षय रोग को समाप्त करना संभव नहीं है।
- भारत में क्षय रोग का परदृश्य:** भारत में वर्ष 2023 में अनुमानति 27 लाख तपेदकि के मामले दर्ज कयि गए, जनिमें से 25.1 लाख व्यक्तयिों का नदिान कयिा गया और उनका उपचार शुरू कयिा गया।
  - भारत में क्षय रोग के मामले वर्ष 2015 में प्रतलाख जनसंख्या पर 237 मामलों से घटकर वर्ष 2023 में प्रतलाख 195 हो गए, जेस अवधामें 17.7% की गरिवट दर्शाता है।
  - उपचार कवरेज वर्ष 2015 में 72% से बढ़कर वर्ष 2023 में 89% हो गया, जसिसे नदिान न कयि गए या उपचार न कयि गए मामलों का अंतर काफी कम हो गया।

### तपेदकि/क्षय रोग/यक्ष्मा/टीबी (TB)

- क्षय रोग बैक्टीरयिा (माइकोबैक्टीरयिम ट्यूबरकुलोससि) नामक जीवाणु के कारण उत्पन्न होता है, जो प्रायः फेफड़ों को प्रभावति करता है।
- संक्रमण:** क्षय रोग एक व्यक्ता से दूसरे व्यक्ता में हवा के ज़रयि फैलता है। जब फेफड़े की क्षय रोग से पीड़ति व्यक्ता खांसता, छीकता या थूकता है

तो वे कृष्य रोग के कीटाणुओं को हवा में फैला देते हैं।

- **लक्षण:** खांसी के साथ बलगम और कभी-कभी खून आना, सीने में दर्द, कमज़ोरी, वजन कम होना, बुखार और रात में पसीना आना।
- **उपचार:** कृष्य रोग एक **उपचार योग्य एवं साध्य रोग** है।
  - कृष्य रोग का इलाज 4 रोगाणुरोधी दवाओं के 6 माह के मानक कोर्स के साथ किया जाता है, जहाँ स्वास्थ्य कार्यकर्ता या प्रशिक्षित स्वयंसेवक द्वारा रोगी को जानकारी, पर्यवेक्षण एवं सहायता भी प्रदान की जाती है।
  - कृष्य रोग रोधी दवाओं का उपयोग दशकों से किया जा रहा है और सर्वेक्षण किये गए प्रत्येक देश में एक या अधिक दवाओं के प्रतिप्रतिरोधी उपभेदों (सुटरेन) की उपस्थिति को दर्ज किया गया है।
    - **बहुऔषध-प्रतिरोधक तपेदकि (Multidrug-resistant tuberculosis- MDR-TB)** कृष्य रोग का एक रूप है जो ऐसे जीवाणु द्वारा उत्पन्न होता है जो दो सबसे प्रभावशाली और प्रथम पंक्तिकी तपेदकि-रोधी दवाओं आइसोनियाज़िड (isoniazid) एवं रफ़ैम्पिसिन (rifampicin) पर प्रतिप्रतिक्रिया नहीं करता है। MDR-TB का उपचार बेडाक्वलिनि (Bedaquiline) जैसी दूसरी पंक्तिकी दवाओं के उपयोग से संभव है।
    - **व्यापक दवा प्रतिप्रतिरोधी तपेदकि (Extensively drug-resistant TB- XDR-TB)** MDR-TB का एक अधिक गंभीर रूप है जो ऐसे जीवाणु के कारण उत्पन्न होता है जो सबसे प्रभावी दूसरी पंक्तिकी कृष्य रोग-रोधी दवाओं पर भी प्रतिप्रतिक्रिया नहीं करता है, जिससे प्रायः रोगियों के पास किसी अन्य उपचार का विकल्प नहीं बचता।

## कृष्य रोग उन्मूलन के लिये भारत की प्रतिबद्धता

- **सतत विकास लक्ष्य 3.3:** **सतत विकास लक्ष्य (SDG)** के एक भाग के रूप में भारत वैश्विक समय-सीमा वर्ष 2030 से पाँच वर्ष पहले ही 2025 तक कृष्य रोग को समाप्त करने के लिये प्रतिबद्ध है।
- **लक्ष्य:**
  - वर्ष 2015 के स्तर से कृष्य रोग की घटनाओं में 80% की कमी।
  - वर्ष 2015 के स्तर से कृष्य रोग मृत्यु दर में 90% की कमी।
  - कृष्य रोग प्रभावित परिवारों के लिये भयावह स्वास्थ्य लागत का उन्मूलन।
- **उच्च स्तरीय पहल: "कृष्य रोग उन्मूलन शिखर सम्मेलन" (2018)** और **"वन वरल्ड टीबी समिति (2023) जैसे आयोजनों में प्रतिबद्धता दोहराई गई तथा भारत द्वारा गांधीनगर घोषणापत्र** पर हस्ताक्षर किये गए (दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के देशों द्वारा कृष्य रोग उन्मूलन के लिये की गई प्रगति का अनुसरण करने हेतु गांधीनगर गुजरात में आयोजित दो दिवसीय बैठक के अंत में अपनाया गया)

## कृष्य रोग उन्मूलन में क्या चुनौतियाँ हैं?

- **अपर्याप्त वैश्विक वित्तपोषण:** वर्ष 2023 में, नमिन और मध्यम आय वाले देशों (LMIC) में उपलब्ध कुल वित्तपोषण 5.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो वर्ष 2027 तक 22 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने के लक्ष्य का केवल 26% के बराबर है।
- **भयावह कृष्य रोग लागत:** कृष्य रोग से पीड़ित लगभग 20% भारतीय परिवारों को भयावह स्वास्थ्य व्यय का सामना करना पड़ता है, जो WHO के शून्य लक्ष्य से कहीं अधिक है।
- **LMIC में सीमिति दाता समर्थन:** LMIC में अंतरराष्ट्रीय दाता वित्तपोषण लगभग 1.1-1.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रतिवर्ष पर स्थिर रहती है।
  - यद्यपि अमेरिका और ग्लोबल फंड प्रमुख योगदानकर्ता हैं, लेकिन उनका समर्थन आवश्यक कृष्य रोग सेवा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अपर्याप्त है।
- **अपर्याप्त वित्त पोषित कृष्य रोग अनुसंधान:** वर्ष 2022 तक 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर के अनुसंधान लक्ष्य का केवल पाँचवाँ हिस्सा ही पूरा होने के कारण कृष्य रोग निदान, दवाओं और टीकों में महत्त्वपूर्ण प्रगति बाधित है।
- **जटिल एवं परस्पर संबद्ध महामारी चालक:** यह महामारी अनेक जोखिम कारकों से प्रेरित है, जिनमें कुपोषण, HIV, शराब का सेवन, धूम्रपान और मधुमेह शामिल हैं।

## कृष्य रोग उन्मूलन के लिये भारत की पहल

- **राष्ट्रीय कृष्य रोग उन्मूलन कार्यक्रम (NTEP)**
- **प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान**
- **कृष्य रोग उन्मूलन हेतु राष्ट्रीय रणनीतिक योजना (2017-2025)।**
- **टीबी हारेगा देश जीतेगा अभियान**
- **नकिष्य पोषण योजना**

## आगे की राह

- **वसितारति तपेदकि नविरक चकित्सा (TPT):** पहुँच बढ़ाने और क्षय रोग संचरण को कम करने के लिये TPT को छोटे उपचारों के साथ बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिये।
- **नवीन नदिन और वकिंदरीकरण:** क्षय रोग का शीघ्र पता लगाने के लिये आणविक नदिन परीक्षण का वसितार करने और रिपोर्टिंग में सुधार करने के प्रयास किये जाने चाहिये।
- **क्षय रोग सेवा वतिरण का वकिंदरीकरण:** "आयुष्मान आरोग्य मंदिरों" के माध्यम से सेवाओं के वकिंदरीकरण से क्षेत्रों में पहुँच और उपचार दक्षता में सुधार होगा।
- **समुदाय-आधारित रोगी सहायता प्रणालियों को बढ़ाना:** रोगी देखभाल में सुधार और कलंक को दूर करने के लिये सामुदायिक भागीदारी तथा सहायता प्रणालियों को मज़बूत करने हेतु प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान (PMTBMA) जैसी पहल को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- **वयस्कों में BCG टीकाकरण पर अध्ययन आयोजित करना:** क्षय रोग की रोकथाम के लिये वयस्कों में बेसिल कैलमेट-ग्यूरनि (BCG) टीकाकरण (क्षय रोग के लिये एक टीका) की प्रभावकारिता का विश्लेषण करने के लिये व्यापक अध्ययन आवश्यक है।

#### दृष्टिभेन्स प्रश्न:

**प्रश्न:** वर्ष 2025 तक क्षय रोग उन्मूलन प्राप्त करने में भारत के दृष्टिकोण और प्रगतिपर चर्चा कीजिये। इस लक्ष्य को पूरा करने में मुख्य बाधाएँ क्या हैं और इनके समाधान के लिये भविष्य में कौन-सी रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं? (250 शब्द)

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

**प्रश्न:** नमिनलखिति में से कौन-से 'राष्ट्रीय पोषण मशिन' के उद्देश्य हैं? (2017)

1. गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में कुपोषण के बारे में जागरूकता पैदा करना।
2. छोटे बच्चों, कशिरथियों और महिलाओं में एनीमिया के मामलों को कम करना।
3. बाजरा, मोटे अनाज और बनिा पॉलशि कयि चावल की खपत को बढ़ावा देना।
4. पोल्ट्री अंडे की खपत को बढ़ावा देना।

**नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:**

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1, 2 और 3
- (c) केवल 1, 2 और 4
- (d) केवल 3 और 4

**उत्तर: A**

??????:

**Q.** "एक कल्याणकारी राज्य की नैतिक अनविर्यता होने के अलावा, सतत् विकास के लिये प्राथमिकि स्वास्थ्य संरचना एक आवश्यक पूर्व शर्त है।" विश्लेषण कीजयि। (2021)